मैं आल्हादिनी

अंतरा-शब्दशक्ति

काव्य संग्रह

पिंकी परूथी ''अनामिका''

मैं आल्हादिनी,...

(काव्य संग्रह)

पिंकी परुथी "अनामिका"

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-30-8

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © पिंकी परुथी "अनामिका"

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Main Alhadini...' by 'Pinki Paruti Anamika'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

मैं आल्हादिनी,...

जिंदगी हर कदम कुछ न कुछ ऐसा अद्भुत करिश्मा दिखाती रहती है, जो हमारी कल्पना से परे होता है। उसे हम प्रारब्ध कह सकते हैं। ऐसा ही कुछ मेरे साथ घटा, इंजीनियरिंग की पढ़ाई के बाद ,, जल्दी ही विवाह ,, और फिर सिर्फ एक महीने की नौकरी कॉलेज में लेक्चरर की, फिर सब कुछ एकदम विपरीत ,,,, दिल्ली छूटा, ससुराल के गृहनगर,,, बारां में प्रवेश,, संयुक्त परिवार,, स्वयं के परिवार की वृद्धि,,, और नौकरी की चाहत रखने के बावजूद भी कुशल गृहिणी बनकर जीवन निर्वाह। पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरा करते हुए, दो बच्चों की परवरिश, सभी से संबंध निर्वाह करते हुए बच्चों के करियर को संवारना, बस इतना सब होने के बाद, जब स्वयं के लिए समय मिला तो अनायास ही एक मित्र के कहने पर लेखन शुरू किया, तभी ईश्वर की कृपा से डॉ प्रीति सुराना जी से संपर्क हुआ जिसे में चमत्कार मानती हूँ। मेरे पति डॉ पंकज परुथी जी का तहेदिल से धन्यवाद करना चाहूँगी , जिन्होंने जीवन के हर क्षेत्र में मेरा साथ दिया और लेखन में भी प्रोत्साहित किया। दोनों बच्चे संजोली और जयराज भी अपनी माँ का नया रूप देखकर बहुत प्रसन्न होते हैं।

प्रीति जी से दो साल की मित्रता का यह असर हुआ कि जिसने मेरी मुझसे पहचान कराई, एक ऐसी दुनिया में प्रवेश करा दिया , जहाँ मुझे इतना प्यार, मान, सम्मान मिला, इतने सारे दोस्त मिले, कि मैं अभिभूत हूँ। मैं आल्हादित हूँ कि मैं स्वयं भी अंतरा शब्द शक्ति परिवार का अभिन्न हिस्सा बन चुकी हूँ, मेरी पहली पुस्तक भी अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन से थी, सृजन समीक्षा, और अब यह दूसरी एकल नई कविता की एकल पुस्तक। लेखन का उद्देश्य समाज में सकारात्मकता का प्रवाह करना है और स्वयं के अनुभव से यदि किसी का भला कर पाऊँ तो खुद को धन्य मानूँगी। आप सभी से निवेदन है कि रचनाओं को पढ़कर,मनोभावों से अवगत कराएँ । माँ सरस्वती की कृपा बनी रहे, आशीर्वाद चाहती हूँ कि जीवन पर्यन्त लेखन जारी रखूँ।

मैं आल्हादिनी..........

पिंकी परुथी "अनामिका"

अनुक्रमणिका

1. मैं आल्हादिनी	5
2. चेहरा	6
3. गीत खुशी के	7
4. खुशबू	8
5. फासले	9
6. पानी बिन	10
7. शून्य	11
8. मेरी रचना..मेरी कविता	12
9. किस्मत की लकीरें	13
10.खोखले जज्बात	14
11.इम्तिहान	15
12.राज़	16

मैं आल्हादिनी

सुनो,
तुम्हारी प्रीत का रंग,
इतना गाढ़ा, इतना गहरा,
चढ़े न कोई दूसरा रंग।
चाहे लगा दो,
अबीर ,गुलाल या फिर कोई, सिंदूरी लाल।
मन रंगा है,
तन रंगा है,
रोम रोम, हर अंग रंगा है।
पलाश, अमलतास, हरसिंगार सी,
तुम्हारी सुगंध,
शरीर से आत्मा तक,
विचरती है क्षण क्षण।
मधुर रसों का हो,
मिश्रण कोई घुलता रहता है।
कोई धारा प्रवेश करती है,
सुगंधित रंगों की।
अनुभूतियों के महारास में,
सतरंगी चुनरिया ओढ़कर,
नृत्य की मुद्राओं में,
भीगी भीगी सी,
मैं आल्हादिनी,.....

चेहरा

सुनो,
तुम कहते हो ना,
कि तुम मेरा चेहरा पढ़ लेते हो।
हां,
तुम सही हो।
मैं नहीं संभाल पाती,
कोई भी संवेदना , दुःख की, तकलीफ की,
सुख की, खुशी की,
आशा और निराशा की,
ममता और दुलार की,
आक्रोश की, हार और जीत की,
इच्छा, अनिच्छा की।
हां,
मैं भावशून्य नहीं हूं!
संवेदनाओं को महसूस करती हूं जीती हूं।
सुनो,
मुझे कोई अफसोस नहीं,
कि मैं नहीं छिपा पाती,
संवेदनाओं को,,,,
बस,, ख़ुश हूं कि,,,
तुम,, मुझे ,, पढ़ लेते हो,
हां,,, मैं खुश हूँ,,,,,!

गीत खुशी के

सुनो,
वो जो डाल पर,
चिड़ा चिड़ी बैठे हैं ना,
कितना प्रेम करते हैं,
एक दूसरे से।
देखो ना,
एक दूसरे को समय देना,
संवाद करना,
भावनाओं की अभिव्यक्ति करना,
पक्षी भी समझते हैं,
संबंधों में उष्णता बनाये रखने के लिए।
जानते हो,
इस प्रकार ही ये भी,
जीवन के सारे मौसम सह जाते हैं,
और फिर बसंत का ,
अभिनन्दन करते हैं,
खुशी खुशी।
और गाते हैं गीत खुशी के........

खुशबू

बड़े नासमझ हो,
खुशबू को क़ैद करते हो।
जिसकी तासीर ही हो,
महकने की,
सुकून देने की।
ग़र बंद भी कर दोगे,
एक डिबिया में,
सँभाले रखने के लिये,
तो क्या,
वो अपनी महक खो देगी?
बल्कि,
डिबिया और ढक्कन के दरमियां,
ख़ला से रिसती खुशबू,
फैलेगी,
निकलेगी,
महकाएगी,
हर उस रहगुज़र को,
और मंजिलें खुद तय करेंगी,
उस तक पहुँचने के रास्ते,
खुद ऐलान करेंगी,
उसके वजूद का,
आज़ाद कराने का,
इनायतें बख्शने का।

फासले

सुनो,
जब चली मैं जिंदगी के रास्तों पे,
चल पड़ी थी,
बिना सोचे समझे ही।
कुछ फासले तय भी किये,
मंजिल का कुछ पता नहीं था,
रास्ते पे कोई निशां भी नहीं थे।
अचानक ही तुम्हारा आना हुआ,
साथ चलना फिर हमारा हुआ।
रुकावटें तो कई आई मगर,
कुछ दिल ने कहा,
फिर भरोसा किया।
तब बड़ों की कही बात,
याद आई,
कि वक्त आने पर ,
सारी कायनात ही,
जुट जाती है,
मंजिल तक पहुँचाने के लिये,,
तब तक सब्र तो करना ही होता है।
सुनो ,
लगता है अब कि,
मेरी मंज़िल तुम ही हो,
हाँ तुम ही हो।

पानी बिन

सूखे दरख़्त,
सूखी ज़मीन,
अनगिनत दरारें,
टेढ़ी मेढ़ी।
बादलों की कमी,
न हवा में नमी।
कैसे बुझे प्यास,
तन की,
मन की,
पानी बिन।
मत काटो,
हरियाली को,
सींचे हुए पेड़ों को,
लहलहाती डालियों को,
छोटी छोटी कलियों को।
प्रेम से सींचो,
पानी से सींचो,
प्रेम ही मिलेगा,
पानी ही मिलेगा।
महसूस होता है,
सूखी ज़मीन सा तो नहीं,
इन्सानी मन भी।

शून्य

ब्रह्माण्ड,
सैकड़ों अंतरिक्ष,
हज़ारों आकाशगंगाएँ,
ग्रह , नक्षत्र,
करोड़ों सूर्य।
हमारा सूर्य,
अनगिनत तारे,
चन्द्र ,
पृथ्वी और ,
हम।
इतना सब है,
किन्तु क्यों है???
शून्य सा,
हृदय के अन्तस में,
क्या यही है???
अन्तर्मिलन,
सृष्टि के शून्य से,
मेरे अस्तित्व के,
शून्य का।

मेरी रचना..मेरी कविता

हृदय में स्पंदित हो,
गिरती हैं कुछ,
संवेदनाएँ,
उल्काओं सी।
टकराकर कई,
अनुभूतियों से,
गहन ऊष्मा का,
निसर्जन,
शरीर की हर,
कोशिका से प्रवाहित हो,
प्रकाशित करती है,
अक्षरों को।
सम्मोहित हो,
एक दूसरे से संयोजित हो,
शब्दों,
पंक्तियों का आकार लेकर,
उतर जाती हैं,
पन्नों पर।
उषा किरणों सी,
लालिमा फैलाती,

किस्मत की लकीरें

सुनो,
ये किस्मत की लकीरें,
जो हैं ना,
उनसे रोज़ लड़ती हूँ मैं।
जिस कैद में रहती हूँ,
समझो कि,
जीती नहीं हूँ पर जिंदा हूँ।
एक आज़ाद,
मुसाफिर थी कभी,
जो अब,
पिंजरे में कैद परिंदा हूँ।
कुछ रहगुज़र,
करीब तो आते हैं,
पर थोड़ा,
मतलबी हो जाते हैं।
क़ैद से छुड़ाने का,
लालच देकर,
ज्यादा अहसान दिखाते हैं।
इतना तो ,
तज़ुर्बा ले लिया है कि,
बाहर की दौड़ से परे,
अंदर की खामोशी बेहतर है।

खोखले जज्बात

रिश्ते ऐसे कहाँ चलते हैं?
भरोसा हो दरमियां,
वफादारी भी हो ज़रा,
निभाने में।
खोखले जज़्बातों से ,
मेल कैसे , कहाँ बनते हैं?
दिखावा हो,
छलावा हो,
आगे गोरा , पीछे सब काला हो ,
ऐसे बंधन कहाँ निभते हैं?
जहाँ परदे हों, खयालों के,
मुलाकात न हो,
असली चेहरे की,
बेहद तंग इरादे हों।
इतने कंटीले पौधों पर,
कब देखा, कहाँ फूल खिलते हैं??
रिश्ते ऐसे कहाँ चलते हैं??

इम्तिहान

ले लो,
एक और इम्तिहान,
क्या चाहती हो,
टूट जाऊँ?
हार जाऊँ?
घुटने टेक दूँ?
मेरे आसूँओं को तुमने,
मेरी कमज़ोरी समझ लिया क्या?
हाँ , बहते हैं बहुत ये,
नहीं छिपा पाती,
लेकिन जोड़े रखते हैं ये,
मुझसे मुझे।
भूलने भी नहीं देते हैं,
कि इम्तिहान चल रहा है।
फैसला भी होगा,
कुछ नुमाइश भी होगी,
कुछ समझाइश भी होगी,
ऐ जिन्दगी,
अभी हिम्मत बाकी है मुझमें,
तू लेती रह ,
मैं देती रहूँगी ,
इम्तिहान जो बाकी हैं।

राज़

राज़ क्या होता है?
मालूम नहीं।
मुझे कुछ छिपाने की आदत नहीं।
बचपन में माँ से सीखा था,
जो तुम चाहो कि,
मैं कोई काम करूँ ऐसा,
छिपाना पड़े सबसे,
मान लेना कि,
तुम ग़लत कर रही हो।
तब से अब तक,
कोशिश ऐसी ही की,
कि न रखूँ कोई राज़,
न छिपाऊँ कोई काज।
जिन्दगी आसान हुई,
और ज़रा हल्की भी हुई ।
माना,
जो चाहा नहीं मिला,
हर बार सब्र किया,
न कोई शिकवा किया ।
एक यही था राज़,
खुश रहने का हमेशा,
अरे! वो भी तो,
खोल दिया आज खुद ही।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - पिंकी परुथी 'अनामिका'

जन्म - 22.10.1970

माता-पिता - श्रीमती निशा तनेजा - श्री हरीशचंद्र जी तनेजा

पति - डॉ. पंकज परुथी

शिक्षा - बी.ई. (इलेक्ट्रिकल 1991)

कार्यक्षेत्र - गृहिणी, समाज सेविका (महिला साक्षरता एवं बाल कल्याण एवं जरुरतमंद मरीजों के लिए कार्यरत्), लेखिका (सभी विधाओं में)

प्रकाशन - साझा संकलन

1. जे.एम.डी. प्रकाशन - नारी काव्य सागर (काव्य संग्रह), हिन्दी सागर (काव्य संग्रह)
2. अर्णव कलश एसोसिएशन - सुगंध परिवेश की (काव्य संग्रह)
3. के.बी.एस. प्रकाशन - अपूर्वा (गीत-नवगीत संग्रह), विचार मंथन (आलेख संग्रह) एवं स्पंदन (काव्य संग्रह)
4. नूतन साहित्य कुंज - कुंज निनाद (काव्य संग्रह), मनोभाव (काव्य संकलन), अखिल भारतीय साहित्य परिषद, राजस्थान (बारां), वूमेंस आवास (काव्य संकलन), अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन, सृजक सृजन समीक्षा(एकल पुस्तक), पत्रिका ब्यूरो (बारां), लोकजंग (भोपाल), वर्तमान अंकुर (नोएडा), डालटा एक्सप्रेस (गाज़ियाबाद) एवं अन्य 70 से अधिक रचानाएं प्रकाशित (एक वर्ष में)।

सम्मान

1. विश्व हिन्दी रचनाकार मंच द्वारा - श्रेष्ठ कवयित्री सम्मान 2017।
2. अर्णव कलश एसोसिएशन द्वारा - पं.माधव प्रसाद मिश्र कलम सौगंध सम्मान।
3. मातृभाषा उन्नयन संस्थान एवं अंतरा शब्द शक्ति द्वारा अंतरा शब्द शक्ति सम्मान ।
4. मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा - भाषा सारथी सम्मान ।
5. काव्यांचल द्वारा - काव्य मेघ सम्मान।
6. काव्यांचल द्वारा - काव्य शिखर सम्मान।
7. वूमेन्स एचीवर अवार्ड 2018- एंटी करप्शन फाउंडेशन ऑफ इंडिया के द्वारा ।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-30-8

मूल्य 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com